International Journal of Enhanced Research in Educational Development
ISSN: 2320-8708, Vol. 3 Issue 6, November-December, 2015

हिंदी साहित्य और विकास में महर्षि दयानन्द का योगदान

पिंकी रानी
Master of Arts (Hindi), NET

सारांश

हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में महर्षि दयानंद सरस्वती की कोई प्रत्यक्ष देन नहीं है, फिर भी हिन्दी के आज के स्वरूप और स्थान की बात करें तो इसे सशक्त और समर्थ बनाने में उनका योगदान अप्रतिम है। महर्षि दयानंद सरस्वती समाज सुधारक, चिन्तक और विचारक थे। हिन्दी भाषा और साहित्य को इस सुधारवादी धार्मिक नेता ने कई प्रकार से प्रभावित किया। हिन्दी भाषा के तत्समीकरण और संस्कृतिकरण पर स्वामी जी का ही प्रभाव है। उन्होंने इस भाषा को वाद-विवाद, खण्डन-मण्डन, शास्त्रार्थ के अनुकूल बनाया और तार्किकता के साथ-साथ इसे व्यंग्य और कटाक्ष की शक्ति से सम्पन्न किया।

परिचय

स्वामी दयानंद सरस्वती गुजराती भाषी थे। उनके पिता वेदज्ञ थे। छोटी उम्र में ही मूलशंकर को वेद कंठस्थ थे। परम तपस्वी दंडी स्वामी विरजानंद जी के यहां मथुरा में 1860 से 1863 तक रह कर उन्होंने वेदों और पाणिनी के अष्टाध्यायी का गहन अध्ययन किया था। कलकत्ता में उनकी भेंट बंगाली भाषी केशवचंद्र सेन से हुई और उनकी प्रेरणा से स्वामी जी ने अपने लेखन और भाषण की भाषा हिंदी बना ली। उन्होंने इसे आर्यभाषा कहा और माना कि आर्यव्रत के प्रत्येक व्यक्ति को आर्यभाषा का ज्ञान होना चाहिए। देश की अखंडता के लिए उन्होंने गुजराती और संस्कृत पर आर्यभाषा को वरीयता दी। गुरू विरजानंद का आदेश पाकर स्वामी जी स्वभाषा, स्वदेश, स्वराज्य, स्वसंस्कृति, स्ववेश, स्वदेशोन्नति का अलख जगाने निकल पड़े। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने 1875 में मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ और प्रगतिशील और इस प्रकार आर्य समाज का अर्थ हुआ श्रेष्ठ और प्रगतिशील लोगों का समाज। मुम्बई से दिल्ली और फिर पंजाब पहुचे। पंजाब में उनके विचारों का भव्य स्वागत हुआ। यहां आर्यसमाज की अनेक शाखाएं खुली और यह प्रांत आर्यसमाज का गढ़ बन गया।

हिंदी साहित्य के विकास में 'हंस' के आत्मकथांक का विशिष्ट योगदान है। सन् 1932 में प्रकाशित इस अंक में जयशंकर प्रसाद, वैद्य हरिदास, विनोदशंकर व्यास, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, दयाराम निगम, मौलवी महेशप्रसाद, गोपालराम गहमरी, सुदर्शन, शिवपूजन सहाय, रायकृष्णदास, श्रीराम शर्मा आदि साहित्यकारों और गैर-साहित्यकारों के जीवन के कुछ अंशों को प्रेमचंद ने स्थान दिया है।

इस काल की सबसे महत्वपूर्ण आत्मकथा श्यामसुंदर दास कृत 'मेरी आत्मकहानी' (सन् 1941) है। इसमें लेखक ने अपने जीवन की निजी घटनाओं को कम स्थान दिया है। इसकी बजाय काशी के इतिहास और समकालीन साहित्यिक गतिविधियों को भरपूर स्थान मिला है। लगभग इसी समय बाबू गुलाबराय की आत्मकथा 'मेरी असफलताएँ' प्रकाशित हुई। इस आत्मकथा में लेखक ने व्यंग्यपूर्ण रोचक शैली में अपने जीवन की असफलताओं का सजीव चित्रण किया है।

हिन्दी केवल भाषा नहीं, देश है

हिन्दी को संविधान में सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार करने का एक ही कारण था-हिन्दी देश की अधिकांश जनता द्वारा बोली और समझी जाती है और इसका एक भौगोलिक तथा ऐतिहासिक आधार है।

पंजाब में गुरुनानक, गुरुगोविन्द सिंह, दलसिंह, धर्मसिंह आदि ने हिन्दी कविताएं लिखीं। मध्ययुगीन गुजरात में भालण, अखा, दयाराम, दलपतराम, ब्राह्मनंद, धीरो आदि ने हिन्दी का प्रयोग किया। यहां के जैन मुनियों ने भी प्राय: हिन्दी में लिखा। महाराष्ट्र में समर्थ रामदास, ज्ञाने·श्वर, गोंदा, सेना, एकनाथ आदि ने हिन्दी में रचनाएं कीं। होल्करों और सिंधिया के दरबार में हिन्दी में काम होता था। दक्षिण में बंदा नवाज, शाह मीरा जी, शाह बुरहानुद्दीन, हाशिमी, कुली कुतुबशाह आदि ने दक्खिनी हिन्दी का प्रयोग किया। फिजी से लेकर कैलिफोर्निया तक भारतीय वंश-वृक्ष पर सूर्य कभी नहीं डूबता है और वह सूर्य हिन्दी का सूर्य है।

केरल के महाराज राम वर्मा, बंगाल का ब्राजबुलि साहित्य, चन्द्र गुणाकर, उड़िया के ब्राजनाथ बड़जैना आदि ने हिन्दी में रचनाएं कीं। कर्नाटक में लिखा गया पद्मचरित्र, मुल्तान में वंचित अब्दुल रहमान का संदेश रसिक आदि हिन्दी के प्रयोग के उदाहरण हैं।

यह कहना गलत है कि संविधान में हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित करने के बाद ही हिन्दी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई या अंग्रेजों के आने के बाद हिन्दीतर लोगों ने अंग्रेजी की ओर ही अधिक ध्यान दिया। एडवर्ड टेरी ने सन् 1655 में अपने यात्रा विवरण में लिखा था-हिन्दी पूरे भारत की भाषा है।

बंगाल में राजा राममोहन राय और बम्बई में श्री पेठे ने सन् 1864 में, भारत के लिए एक भाषा आवश्यक है और वह है हिन्दी, कहा था। केशवचन्द्र सेन ने सन् 1875 में सुलभ समाचार में स्वामी दयानंद से हिन्दी में आर्यसमाज का प्रचार कार्य करने का आग्रह किया था।

हिन्दी का पहले व्यवस्थित गद्य ग्रंथ प्रेमसागर के लेखक लल्लूलाल गुजराती थे। श्याम सुंदर सेन ने पहला हिन्दी दैनिक समाचार "सुधा वर्षण' प्रकाशित किया था। हिन्दी प्रदेश का पहला पत्र "बनारस अखबार' मराठी विद्वान रघुनाथ थत्ते ने निकाला था। बंकिमचन्द्र सन् 1878 में "बंग दर्शन' में और भूदेव मुखर्जी ने अपने निबंधों में बिहार की कचहरियों की भाषा हिन्दी का पक्ष लिया था। सन् 1918 में महात्मा गांधी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की थी और इसीलिए जब लोकसभा में सन् 1948 में राजभाषा हिन्दी की बात उठी तो गोपाल स्वामी अय्यंगार ने कहा था कि हिन्दी दक्षिण के लिए कोई नई भाषा नहीं। संविधान सभा की कार्यवाही की रपट पढ़ने से पता चलता है हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव गोपाल स्वामी

अय्यंगार ने रखा था और उसका समर्थन महाराष्ट्र के शंकरराव देव, आंध्र प्रदेश की श्रीमती दुर्गाबाई, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, गुजरात के कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी और कर्नाटक के कृष्णमर्ति राव थे।

कहने का तात्पर्य है कि सदियों से हिन्दी बिना किसी विज्ञापन के राष्ट्रीय हित के निमित्त भाषा और साहित्य के माध्यम से देश को जोड़ने का सहज और सरल ढंग से काम करती रही और उस काम में हिन्दीतर प्रांत के लोग लगातार सहयोग देते रहे। हिन्दी इस दृष्टि से, सही मायने में भारतीय सामरिक संस्कृति की प्रतीक है। वह केवल भाषा नहीं, वह एक देश है। इसकी अवधारणा एक छतरी के समान है, जिसके नीचे कई भाषाएं, बोलियां इकट्ठी, रची-बसी हुई हैं-यह एक भाषा परिवार है।

हिन्दी - प्रसार आन्दोलन में महर्षि दयानन्द जी का योगदान

आर्य समाज का सत्संग और सम्मेलन हिंदी में ही होता था। इसलिए हिंदी-प्रसार को सुन्दर आधार मिला। आर्य समाज द्वारा गुरूकुलों, कन्या-पाठशालाओं और महिला-विद्यालयों की स्थापना की, जिनमें हिंदी की अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था थी। गुरूकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम विज्ञान की शिक्षा हिंदी में देने की सफल व्यवस्था की गई। इस विषय में श्री इन्द्रविद्यावाचस्पति का कथन उद्धरणीय है, ''भारत में पहला शिक्षणालय, जिसमें राष्ट्रभाषा के माध्यम द्वारा समपूर्ण ज्ञान की शिक्षा का सफल परीक्षण किया गया, गुरूकुल काँगड़ी था।''

आर्य समाज के द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक उत्कर्ष के लिए हिंदी में अनेक साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाएँ प्रकाशित की गई। भारत की जनता स्वामी दयानन्द के विचार पढ़ना चाहती थी। इन पत्र-पत्रिकाओं में ऐसे विचार प्रकाशन से हिंदी पर्याप्त लोकप्रिय बनी। स्वामी जी पहले संस्कृत में व्याख्यान देते थे, किन्तु कलकत्ता के ब्रहम समाज के नेता केशव सेन के आग्रह पर उन्होंने हिंदी को अपनाया है। इस प्रकार हिंदी-प्रसार को लोकप्रिय आधार मिला है। स्वामी जी के परम सहयोगी इन्द्रविद्यावाचस्पति ने स्वामी जी के हिंदी-प्रेम के महत्त्व के विषय में लिखा है-

''महर्षि ने लोक-भाषा को उपदेश का साधन बनाकर न केवल अपने मिशन को लोकप्रिय और व्यापक बना दिया। भविष्य में राष्ट्रभाषा बनाने वाली आर्य को पुष्टि देकर राष्ट्र के स्वाधीनता-भवन की दृढ़ बुनियाद भी रख दी।''

गुजराती भाषा-भाषा स्वामी जी के हिंदी-प्रेम से उनके अनुयायियों में अनुकरणीय हिंदी प्रेम जगा। श्री राम गोपाल के शब्दों में, ''उनके अनुयायियों के धर्म-प्रचार से जो अधिक उत्तम चीज राष्ट्रीय जीवन को प्राप्त हुई, वह थी राष्ट्रभाषा का प्रचार।'' आर्य समाज के माध्यम से हिंदी का प्रचार भारत से बाहर मॉरिशस, फिजी, गयाना, सूरीनाम, ट्रिनीडाड-टुबैगो, युगांडा और लंदन में हुआ।

आर्य समाज ने जैसा प्रेरक कार्य सामाजिक, धार्मिक क्षेत्रों में किया, इसी प्रकार हिंदी-प्रसार में सर्वोतम कार्य किया।

स्वामी दयानंद सरस्वती की आत्मकथा सन् 1875 में प्रकाश में आई। इस आत्मकथा में दयानंद सरस्वती के जीवन के विविध पक्षों यथा-ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय, विद्वत्ता, सत्यनिष्ठा और निर्भीकता आदि का सजीव चित्रण हुआ है। सत्यानंद अग्निहोत्रीकृत 'मुझ में देव जीवन का विकास' का पहला खण्ड सन् 1909 में और दूसरा खण्ड सन् 1918 में प्रकाशित हुआ। इस आत्मकथा में आत्मश्लाघा की प्रधानता है। सन् 1921 में भाई परमानंदकी आत्मकथा 'आपबीती' प्रकाशित हुई। इसे किसी क्रांतिकारी की प्रथम आत्मकथा माना जा सकता है। इसमें लेखक ने स्वतंत्रता आंदोलन में

अपने योगदान, अपनी जेल यात्रा और अपने ऊपर पड़े आर्य समाज के प्रभाव को रेखांकित किया है। सन् 1924 में स्वामी श्रद्धानंद की आत्मकथा 'कल्याणमार्ग का पथिक' प्रकाशित हुई। इसमें उन्होंने अपने जीवन संघर्षों और आत्मोत्थान का वर्णन किया है।

निष्कर्ष

सांस्कृतिक दृष्टि से भारत एक पुरातन देश है, किंतु राजनीतिक दृष्टि से एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में भारत का विकास एक नए सिरे से ब्रिटेन के शासनकाल में, स्वतंत्रता-संग्राम के साहचर्य में और राष्ट्रीय स्वाभिमान के नवोन्मेष के सोपान में हुआ। हिंदी भाषा एवं अन्य प्रादेशिक भारतीय भाषाओं ने राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वतंत्रता-संग्राम के चैतन्य का शंखनाद घर-घर तक पहुँचाया । स्वामी दयानन्द देश की सामाजिक आवश्यकताओं से अवसत थे और इन आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षा-योजना बनाना चाहते थे। उनके शिक्षा-सम्बन्धी कार्यक्रम में व्यक्ति के व्यावहारिक अनुभव सम्मिलित हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक युग की शिक्षा के आधार पर आधुनिक शिक्षा एवं हिंदी भाषा का विकास किया।

संदर्भ

[1]. आधुनिक हिंदी साहित्य, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, इलाहबाद विश्वविद्यालय, 1954 ।
[2]. अम्बिकादत्त शर्मा (सम्पा.) (2005), स्वातंत्र्योत्तर दार्शनिक प्रकरण-1-समेकित दार्शनिक विमर्श, विश्वविद्यालय प्रकाशन, सागर ।
[3]. राजा राममोहन राय एवं महर्षि दयानंद सरस्वती: व्यक्तित्व और कृतित्व, गीतांजलि प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 57-60 ।
[4]. भाषा का इतिहास, रिसर्च स्कॉलर, विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद, दिल्ली, 2012 ।
[5]. http://shodhganga.inflibnet.ac.in
[6]. https://hi.wikipedia.org/w/index.php?search=हिंदी+विकास+में+दयानन्द+सरस्वती